तीन वर्षीय
स्नातक
प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम
हिन्दी

(सेमेस्टर पद्धति के अनुरूप–सत्र 2015–16 से लागू)

बी0ए0 भाग–1

प्रथम सत्र

प्रथम प्रश्न पत्र

भक्ति काव्य ठ।ि 111

क्रेडिट : 03

भक्तिकाव्य हिन्दी भाषी समाज की जीवित विरासत का महत्वपूर्ण अंग है। इस पाठ्यक्रम में भक्ति काव्य की विविध धाराओं के शीर्ष कवियों कबीर, जायसी, सूरदास और तुलसीदास के माध्यम से हम भक्ति आंदोलन और भक्ति काव्य के विविध पक्षों को समझने का प्रयास करेंगे।

पाठ्यपुस्तक : भक्ति काव्य संग्रह, संपादक : हिन्दी विभाग, प्रकाशन : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

निर्धारित पाठ्य अंश :

कबीर : (कबीर ग्रंथावली–श्यामसुंदर दास) (पद) मन रे जागत रहिये भाई, अकथ कहानी प्रेम की, संतौ भाई आई ज्ञान की आँधी रे, हम न मरै, काहे रे नलिनी, मोको कहाँ ढूढ़े रे बंदे ,ना जाने तेरा साहब कैसा है, रहना नहिं देस बिराना है, माया महा ठगिनि हम जानी, मेरा तेरा मनुआ कैसे इक होई, दुलहिनी गावहुँ मंगलचार, तोहि मोरी लगन लगाये रे फकीरवा, हंसा करो पुरातन बात।

साखी – 3.29, 3.33, 3.45, 5.39, 11.2, शेष (10) पूर्ववर्ती पाठ्यक्रम से यथावत

जायसी : पद्मावत – मानसरोदक खंड

सूर : अविगत गति कुछ कहत न आवै, जा पर दीनानाथ ढरै, अब मैं नाच्यौ बहुत गुपाल, मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै, किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत, जसोदा हरि पालने झुलावैं, मैया हौं न चरैहौं गाइ, मुरली तऊ गुपालहिं भावति, बूझत स्याम कौन तू गोरी, जसुमति राधा कुँवरि सँवारति, तबही तै हरि हाथ बिकानी, झूलत स्याम स्यामा संग, अद्भुत एक अनुपम बाग, ऊधौ मन न भए दस बीस, ऊधौ जोग जोग हम नाहीं । (15)

तुलसीदास : विनय पत्रिका (गीता प्रेस संस्करण) –पद सं. 146, 155, 162, 172, 174,198, 230.
रामचरित मानस (गीता प्रेस संस्करण), अयोध्या कांड– दोहा सं. 163 से 169.

इकाई 1 : भक्ति आंदोलन एवं भक्ति काव्य

(क) भक्ति आंदोलन : लोक जागरण
(ख) भक्ति : आशय
(ग) हिन्दी का भक्ति काव्य : इतिहास
(घ) भक्ति काव्य : विविध धाराएँ

इकाई 2 : कबीर

(क) कबीर का काव्य संसार
(ख) कबीर की कविता : सामाजिक भूमिका
(ग) कबीर : दार्शनिक परिप्रेक्ष्य
(घ) कबीर की काव्य–कला

इकाई 3 : जायसी

(क) जायसी का काव्य संसार
(ख) पद्मावत में सूफ़ी तत्त्व
(ग) मानसरोदक खण्ड का महत्त्व
(घ) काव्य कला

इकाई 4 : सूरदास

(क) काव्य संसार
(ख) प्रेम का स्वरूप
(ग) वात्सल्य वर्णन
(घ) काव्य कला

इकाई 5 : तुलसीदास

(क) तुलसी : काव्य संसार
(ख) सामाजिक–पारिवारिक आदर्श
(ग) रामचरितमानस का महत्त्व
(घ) काव्य कला

अनुशंसित ग्रंथ :

1. सूरदास – रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. तुलसीः एक पुनर्मूल्यांकन –सं. अजय तिवारी, आधार प्रकाशन, पंचकूला
3. कबीर – हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
4. लोकवादी तुलसीदास– विश्वनाथ त्रिपाठी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
5. जायसी – विजयदेव नारायण साही, हिंदुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद

6. कबीर की खोज – राजकिषोर, वाणी प्रकाषन, नयी दिल्ली
7. पूरा कबीर –सं. बलदेव वंषी, प्रकाषन संस्थान, नयी दिल्ली
8. महाकवि सूरदास – नंददुलारे वाजपेयी, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली
9. सूर साहित्य – हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर, बम्बई
10. गोस्वामी तुलसीदास – रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
11. गोसाईं तुलसीदास – विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी वितान, वाराणसी
12. तुलसी आधुनिक वातायन से –रमेश कुंतल मेघ, राजकमल प्रकाशन,नयी दिल्ली
13. परम्परा का मूल्यांकन – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
14. भक्तिकाव्य और लोक जीवन – शिवकुमार मिश्र, दिल्ली

द्वितीय प्रश्न पत्र
(रीतिकाव्य)

ठ।‑ 112

क्रेडिट : 03

तीन महत्वपूर्ण कवियों बिहारी, घनानंद और भूषण के माध्यम से रीतिकाव्य की विशिष्ट प्रकृति को समझने के साथ ही इस प्रश्न पत्र में हम रीतिकाव्य की पृष्ठभूमि में कार्य कर रही विविध काव्यशास्त्रीय अवधारणाओं यथा–रस, अलंकार और छंद की सामान्य जानकारी प्राप्त करेंगे।

पाठ्यपुस्तक : रीतिकाव्य संग्रह और काव्यांग परिचय, संपादक : हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।

पाठ्यांश :

बिहारी : बिहारी (सं0 विश्वनाथ प्रसाद मिश्र) : दोहा सं 2, 5, 11, 34, 37, 45, 66, 75, 82, 84, 90, 95, 104, 114, 118, 199, 263, 316, 525, 550,511, 515, 530, 539, 467, 473,474,490, 521, 577(30).

घनानन्द : घनानंद कवित्त : सं0 विश्वनाथप्रसाद मिश्र, छंद सं0 2, 3, 4, 5, 6, 8, 10,13, 14, 15 (10).

भूषण : रीति काव्य धारा – सं. रामचंद्र तिवारी, छंद सं0 9, 10, 11, 12, 15, 18, 21, 22, 23, 24 (10)

इकाई 1 : बिहारी

(ए) काव्य संसार
(पप) रीति– सिद्ध कवि के रूप में बिहारी
(पपप) शृंगारिकता
(पट) काव्य कला

इकाई 2 : घनानंद एवं भूषण

(ए) घनानंद : प्रेम वर्णन
(पप) घनानंद : भाषा एवं काव्य कला
(पपप) भूषण : वीरता की कविता
(पट) भूषण : भाषा एवं काव्य कला

इकाई 3 : रस

(ए) रस : परिभाषा, साधारणीकरण
(पप) रस निष्पत्ति
(पपप) शृंगार रस : उदाहरण सहित परिचय
(पट) अन्य रस : उदाहरण सहित परिचय

इकाई 4 : अलंकार

(घ) अलंकार : परिभाषा , भेद

(ङ) शब्दालंकार : अनुप्रास, यमक, श्लेष

(च) अर्थालंकार :उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा

(छ) संदेह, भ्रांतिमान, उल्लेख, अतिशयोक्ति

इकाई 5 : छंद

(घ) छंद की अवधारणा

(ङ) वार्णिक एवं मात्रिक छंद

(च) दोहा, चौपाई, सोरठा, छप्पय, कुंडलिया, रोला का उदाहरण सहित परिचय

(छ) हरिगीतिका, सवैया, मनहरण, कवित्त एवं घनाक्षरी कवित्त का उदाहरण सहित परिचय।

अनुशंसित ग्रंथ :

1. रीतिकाव्य की भूमिका – नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

2. बिहारी का नया मूल्यांकन – बच्चन सिंह, लोकभारती, इलाहाबाद

3. घनानंद और स्वच्छंद काव्यधारा – मनोहर लाल गौड़, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

4. रीतिकालीन कवियों की प्रेमव्यंजना – डॉ0 बच्चन सिंह, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

5. रीतिकालीन काव्य सिद्धान्त – डॉ0 सूर्यनारायण द्विवेदी, संजय बुक सेंटर, वाराणसी।

6. हिन्दी साहित्य का अतीत, भाग–2, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी वितान, वाराणसी।

द्वितीय सत्र
तृतीय प्रश्न पत्र
कथा साहित्य

ठ ।भ्21

क्रेडिट : 03

कहानी और उपन्यास आधुनिक साहित्य की सर्वाधिक प्रभावशाली और लोकप्रिय विधायें हैं। इस पाठ्यक्रम में हम विधा के रूप में उपन्यास और कहानी का सामान्य परिचय और हिन्दी विधाओं के विकास की संक्षिप्त रूपरेखा की जानकारी प्राप्त करेंगे। दो महत्वपूर्ण उपन्यासों 'चित्रलेखा' और 'बहती गंगा' तथा चार कहानियों से विद्यार्थी इन विधाओं का परिचय प्राप्त करेंगे।

पाठ्यांश :

कहानी : सद्गति, शरणदाता, मलबे का मालिक, वापसी

उपन्यास : कर्मभूमि – प्रेमचंद

बहती गंगा – रूद्र काशिकेय

इकाई 1 : कथा साहित्य

(प) विधा के रूप में उपन्यास : सामान्य परिचय
(पप) हिन्दी उपन्यास : संक्षिप्त रूपरेखा
(पपप) हिन्दी कहानी : सामान्य परिचय
(प्ट) हिन्दी कहानी : संक्षिप्त रूपरेखा

इकाई 2 : कर्मभूमि

(प) कथावस्तु
(पप) चरित्र चित्रण
(पपप) प्रतिपाद्य
(प्ट) भाषा एवं शिल्प

इकाई 3 : बहती गंगा

(प) कथावस्तु
(पप) काशी का चित्रण
(पपप) प्रतिपाद्य
(प्ट) भाषा एवं शिल्प

इकाई 4 : कहानियाँ

(प) सद्गति : कथावस्तु
(पप) भारत में दलित समाज एवं 'सद्गति'
(पपप) शरणदाता : संवेदना एवं कथावस्तु
(प) शरणदाता : भाषा एवं शिल्प

इकाई 5 : कहानियाँ

(प) मलबे का मालिक : संवेदना एवं कथावस्तु
(पप) मलबे का मालिक : भाषा एवं शिल्प
(पपप) वापसी : संवेदना एवं कथावस्तु
(प्ट) वापसी : भाषा एवं शिल्प

अनुशंसित ग्रंथ :

1. प्रेमचंद और उनका युग – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
2. कहानी नयी कहानी – नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. कहानी आंदोलन की भूमिका – बलिराज पांडेय, अनामिका प्रकाशन, इलाहाबाद
4. आज की हिंदी कहानी – विजय मोहन सिंह, दिल्ली
5. उपन्यास : स्थिति और गति– चंद्रकांत बॅड़दिवेकर
6. उपन्यास का इतिहास –गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

चतुर्थ प्रश्न पत्र
निबंध एवं नाटक

ठ।च् 122

क्रेडिट : 03

इस पाठ्यक्रम में हम कथेतर गद्य विधाओं में निबंध और नाटक का सामान्य परिचय प्राप्त करने के साथ ही छः निबंधों और 'चंद्रगुप्त' नाटक के माध्यम से इन विधाओं के विवेचन की प्रणाली की समझ विकसित करने का प्रयास करेंगे।

पाठ्यपुस्तक : प्रतिनिधि हिन्दी निबंध, संपादक : हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।

पाठ्यांश :

निबंध : 1. हंस का नीर–क्षीर विवेक, 2. आचरण की सभ्यता, 3. उत्साह 4. शिरीष के फूल, 5. महाकवि की तर्जनी, 6. आँगन का पंछी

नाटक : ध्रुवस्वामिनी– जयशंकर प्रसाद

नाटक : कबिरा खड़ा बजार में'– भीष्म साहनी

इकाई 1 : ध्रुवस्वामिनी

(प्) इतिहास एवं कल्पना
(प्प्) ध्रुवस्वामिनी का चरित्र
(प्प्प्) की चेतना
(प्ट्) रंगमंचीयता

इकाई 2 :

(प्) इतिहास एवं कल्पना
(प्प्) का चरित्र
(प्प्प्) की चेतना
(प्ट्) रंगमंचीयता

इकाई 3 : (प्) हंस का नीर – क्षीर विवेक : केन्द्रीय विचार
(प्प्) हंस का नीर – क्षीर विवेक : भाषा एवं शिल्प

(प्प्प) आचरण की सभ्यता : केन्द्रीय विचार
(प्ट) आचरण की सभ्यता : भाषा एवं शिल्प

इकाई 4 :

(प) उत्साह **:** केन्द्रीय विचार
(प्प) उत्साह : भाषा एवं शिल्प
(प्प्प) शिरीष के फूल **:** केन्द्रीय विचार
(प्ट) शिरीष के फूल : भाषा एवं शिल्प

इकाई 5 :

(प) महाकवि की तर्जनी **:** केन्द्रीय विचार
(प्प) महाकवि की तर्जनी : भाषा एवं शिल्प
(प्प्प) आँगन का पंछी **:** केन्द्रीय विचार
(प्ट) आँगन का पंछी : भाषा एवं शिल्प

अनुशंसित ग्रंथ :

1 रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

2 दूसरी परम्परा की खोज – नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

3 रामचन्द्र शुक्ल – मलयज, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

4 आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का साहित्य – चौथीराम यादव, हरियाणा ग्रंथ अकादमी

5. समकालीन हिन्दी निबंध : कमला प्रसाद, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़

6. हिन्दी निबंध और निबंधकार– रामचन्द्र तिवारी

7. हिंदी नाटक : उद्भव और विकास – दशरथ ओझा, राजपाल एंड संस, दिल्ली

8. पहला रंग – देवेन्द्रराज अंकुर, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

9. रंग परम्परा – नेमिचन्द्र जैन

10. समकालीन हिन्दी नाटक की संघर्श चेतना – गिरीष रस्तोगी, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़

बी. ए. भाग–2
तृतीय सत्र
पंचम प्रश्न प्रत्र
आधुनिक काव्य 1

ठ।भ 211

क्रेडिट : 03

आधुनिक कविता की ऐतिहासिक उपलब्धि 'छायावाद' के चार शीर्ष कवियों जयशंकर प्रसाद, निराला, सुमित्रानंद पंत और महादेवी वर्मा की प्रतिनिधि कविताओं के पाठ के साथ ही इस पाठ्यक्रम में हम इन कवियों की विशिष्टता को समझने का प्रयास करेंगे। छायावाद की पूर्ववर्ती काव्यधारा के प्रतिनिधि के रूप में मैथिलीशरण गुप्त का अध्ययन भी यहाँ किया जायेगा।

पाठ्यपुस्तक : आधुनिक हिन्दी काव्य, संपादक : हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।

पाठ्यांश :

(1) मैथिलीशरण गुप्त : हम कौन थे (अंश–भारत भारती), कैकेयी का अनुताप, प्रियतम तुम श्रुति पथ से।
(2) जयशंकर प्रसाद : मेरे नाविक, तुमुल कोलाहल कलह, बीती विभावरी जाग री, आह वेदना मिली विदाई, पेशोला की प्रतिध्वनि।
(3) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : बादल राग–6, स्नेह निर्झर बह गया है, संध्या सुंदरी, तोड़ती पत्थर, राजे ने फिर रखवाली की।
(4) सुमित्रानंदन पंत : मोह, प्रथम रश्मि, भारतमाता ग्रामवासिनी।
(5) महादेवी वर्मा : जब यह दीप थके तब आना, जाग तुझको दूर जाना, मैं नीर भरी दुख की बदली।
(6) माखनलाल चतुर्वेदी : कैदी और कोकिला, उलाहना।

इकाई 1 : मैथिलीशरण गुप्त : (प) काव्य संसार एवं काव्य दृष्टि
(पप) राष्ट्रीय आंदोलन की चेतना
(पपप) आख्यान की आधुनिकता
(पट) काव्य भाषा के रूप में खड़ी बोली का विकास

इकाई 2 : जयशंकर प्रसाद : (प) काव्य संसार एवं काव्य दृष्टि
(पप) रोमेंटिक प्रवृत्ति
(ppp) राष्ट्रीय चेतना
(पट) भाषा एवं शिल्प

इकाई 3 : निराला : (प) काव्य संसार एवं काव्य दृष्टि
(पप) छायावादी चेतना
(ppp) प्रगतिशील चेतना एवं प्रयोगशीलता
(पट) भाषा एवं शिल्प

इकाई 4 : सुमित्रानंदन पंत : (प) काव्य विकास
(पप) स्वच्छंदतावादी प्रवृत्ति
(ppp) प्रकृति चित्रण की विशिष्टता
(पट) भाषा एवं शिल्प

इकाई 5 : महादेवी वर्मा : (प) काव्य संसार
(पप) छायावादी चेतना
(ppp) रहस्य भावना
(पट) भाषा एवं शिल्प

इकाई 6ः माखनलाल चतुर्वेदी :
(प) काव्य संसार एवं काव्य दृष्टि
(पप) राष्ट्रीय आंदोलन की चेतना
(ppp) स्वच्छंदतावादी चेतना
(पट) भाषा एवं शिल्प

अनुशंसित ग्रंथ :

1. मैथिलीषरण गुप्त : रेवतीरमण, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
2. जयशंकर प्रसाद : नंददुलारे वाजपेयी, भारतीय भंडार, इलाहाबाद
3. कामायनी – एक पुनर्विचार : मुक्तिबोध, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
4. निराला की साहित्य साधना (भाग दो, तीन) : रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5. सुमित्रानंदन पंत : डॉ. नगेन्द्र
6. छायावाद : नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
7. महादेवी वर्मा : जगदीश गुप्त, नई दिल्ली,
8. छायावाद की प्रासंगिकता : रमेशचन्द्र शाह, नई दिल्ली,
9. छायावाद और नवजागरण : महेन्द्रनाथ राय, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

10. पंत, प्रसाद और मैथिलीषरण गुप्त : रामधारी सिंह दिनकर

11. क्रांतिकारी कवि निराला : डा. बच्चन सिंह

12. आत्महंता आस्था : निराला : दूधनाथ सिंह, लोकभारती प्रकाषन, इलाहाबाद

13. प्रसाद का काव्य – डॉ0 प्रेम शंकर।

षष्ठ प्रश्न प्रत्र
आधुनिक काव्य 2 ठ।ⱶ 212

क्रेडिट : 03

राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रतिनिधि कवियों माखनलाल चतुर्वेदी और रामधारी सिंह दिनकर, प्रगतिशील काव्यधारा के प्रतिनिधि कवियों नागार्जुन और केदारनाथ अग्रवाल तथा प्रयोगवादी आधुनिकता बोध के शीर्ष कवि अज्ञेय की महत्वपूर्ण कविताओं के माध्यम से इस पाठ्यक्रम में इन काव्य धाराओं तथा इसके प्रतिनिधि कवियों की विशिष्टताओं की समझ विकसित करना ही इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

पाठ्यपुस्तक : आधुनिक हिन्दी काव्य, संपादक : हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।

पाठ्यांश :

(1) रामधारी सिंह दिनकर : हिमालय, दिल्ली, विपथगा।
(2) केदारनाथ अग्रवाल : मैंने उसको, मुझे नदी से बहुत प्यार है, चंद्रगहना से लौटती बेर।
(3) नागार्जुन : मास्टर, यह दंतुरित मुस्कान, अकाल और उसके बाद।
(4) अज्ञेय : नदी के द्वीप, कलगी बाजरे की, दूर्वादल।
(5) त्रलोचन चम्पा, नदी : कामधेनु, धूप सुन्दर और
(4) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना लाल साइकिल, सुरों के सहारे, कआनो नदी के पार

इकाई 1 : रामधारी सिंह दिनकर :
(ए) काव्य संसार एवं काव्य दृष्टि
(प्) स्वाधीनता आंदोलन का प्रभाव
(प्प्) आख्यान की आधुनिकता
(प्ट) भाषा एवं शिल्प

इकाई 2 : नागार्जुन : (ए) काव्य संसार एवं काव्य दृष्टि
(प्) प्रगतिशीलता
(प्प्) राजनीतिक चेतना
(प्ट) रचना विधान

इकाई 3 : केदारनाथ अग्रवाल : (ए) काव्य संसार एवं काव्य दृष्टि
(प्) लोक जीवन एवं प्रकृति
(प्प्) राजनीतिक चेतना
(प्ट) रचना विधान

इकाई 4: अज्ञेय : (प) काव्य संसार एवं काव्य दृष्टि
(पप) प्रयोगशीलता
(पपप) आधुनिक भावबोध
(पट) भाषा एवं शिल्प

इकाई 5 : त्रिलोचन

(प) त्रिलोचन का काव्य संसार एवं काव्य दृष्टि
(पप) युग संदर्भ
(पपप) लोक जीवन एवं सौंदर्य
(पट) त्रिलोचन : भाषा एवं शिल्प

अनुशंसित ग्रंथ :

1. नयी कविता और अस्तित्ववाद – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
2. अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या – रामस्वरूप चतुर्वेदी,
3. समकालीन हिंदी कविता – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी,
4. समकालीन कविता का यथार्थ – परमानंद श्रीवास्तव, हरियाणा ग्रंथ अकादमी
5. कविता के नये प्रतिमान –नामवर सिंह, राजकमल प्रकाषन, नयी दिल्ली
6. एक कवि की नोटबुक : राजेष जोषी, राजकमल प्रकाषन, नयी दिल्ली
7. कविता और समाज : अरुण कमल , वाणी प्रकाषन, नयी दिल्ली
8. मेरे समय के षब्द : केदारनाथ सिंह, राधकृश्ण प्रकाषन, नयी दिल्ली
9. कवियों की पृथ्वी : अरविंद त्रिपाठी, आधार प्रकाषन, पंचकूला, हरियाणा
10. कवि कह गया है : अषोक वाजपेयी, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली
11. समकालीन काव्य यात्रा : नंदकिषोर नवल,राजकमल प्रकाषन, नयी दिल्ली
12. साठोत्तरी कविता : परिवर्तित दिषाएँ : विजय कुमाार, प्रकाषन संस्थान

चतुर्थ सत्र

सप्तम् प्रश्न प्रत्र

हिन्दी भाषा का इतिहास ठ।भ 221

क्रेडिट : 03

इस पाठ्यक्रम में हम हिन्दी भाषा के इतिहास का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

पाठ्यांश :

इकाई 1 : (प) हिन्दी भाषा का उद्भव एवं विकास
(पप) प्राचीन भारतीय आर्यभाषायें
(ppप) मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषायें
(पट) आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं की सामान्य विशेषतायें।

इकाई 2 : (प) हिन्दी का क्षेत्र निर्धारण
(पप) हिन्दी और उसका क्षेत्र–विस्तार
(ppप) प्रमुख बोलियों का संक्षिप्त परिचय

इकाई 3 : (प) राजभाषा, राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी
(पप) राजभाषा हिन्दी एवं उसकी संवैधानिक स्थिति – अनुच्छेद – 343 से 351 तक
(ppप) राजभाषा अधिनियम 1976 का संक्षिप्त परिचय

इकाई 4 : (प) खड़ी बोली का विकास
(पप) हिन्दी का वर्तमान परिदृश्य–राष्ट्रीय
(ppप) हिन्दी का वर्तमान परिदृश्य– अंतर्राष्ट्रीय

अनुशंसित ग्रंथ :

1 भाषा विज्ञान की भूमिका – देवेन्द्र नाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
2 भाषा विज्ञान – भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद।
3 सामान्य भाषा विज्ञान – बाबूराम सक्सेना, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।
4 हिंदी भाषा का उद्भव और विकास – उदयनारायण तिवारी, भारती भंडार, इलाहाबाद।
5 भाषा और समाज – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

अष्टम् प्रश्न प्रत्र

हिन्दी साहित्य का इतिहास ठ।ॅ 222

क्रेडिट : 03

इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थी हिंदी साहित्य के विकास की संक्षिप्त जानकारी प्राप्त करेंगे।

इकाई 1 : (ए) हिन्दी साहित्य : काल विभाजन एवं नामकरण
(प) आदिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं रचनाकार
(पप) भक्तिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं रचनाकार
(प्ट) रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं रचनाकार

इकाई 2 : (ए) निर्गुण भक्ति काव्यधारा
(प) सूफ़ी काव्यधारा
(पप) कृष्ण भक्ति शाखा
(प्ट) राम भक्ति शाखा

इकाई 3 : (ए) आधुनिक साहित्य की पृष्ठभूमि
(प) भारतेन्दु युग
(पप) द्विवेदी युग
(प्ट) छायावाद
(ट) प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता

इकाई 4 : (ए) कहानी : विकास
(प) उपन्यास : विकास
(पप) नाटक : विकास
(प्ट) निबंध : विकास

अनुशंसित ग्रंथ :

1 हिंदी साहित्य का इतिहास – रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

2 हिंदी साहित्य की भूमिका – हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

3 हिंदी साहित्य : उद्भव और विकास – हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

4 हिंदी साहित्य का आदिकाल – हजारी प्रसाद द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना

6 हिंदी साहित्य का इतिहास – सं0 नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

7 हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती, इलाहाबाद

9 हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास – बच्चन सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

10 साहित्य और इतिहास दृष्टि – मैनेजर पांडेय, पीपुल्स लिटरेसी, दिल्ली

बी.ए. भाग–3
पंचम सत्र
नवम् प्रश्न पत्र
आदिकाव्य एवं निर्गुण भक्तिकाव्य ठ।⊬ 311

क्रेडिट : 03

आदिकाल का अध्ययन हिंदी साहित्य के अध्ययन को पूर्णता प्रदान करता है। यहाँ हम आदिकालीन काव्य एवं भाषा की तीन धाराओं के प्रतिनिधियों चंदबरदायी, विद्यापति और अमीर खुसरो के माध्यम से इस काल की कविता को समझेंगे। इस क्रम में भक्ति काव्य की निर्गुण धारा के प्रतिनिधि कवियों कबीर और जायसी का अध्ययन हिंदी भाषा और साहित्य के विकास को समझने में विद्यार्थियों का सहयोग करेगा।

1.1 चंदबरदायी : कयमास वध। (प्रारंभिक 10 छंद)

1.2 विद्यापति : कनक भूधर शिखर वासिनि, नन्दक नन्दन कदम्बोरि तरुतरे, देख देख राधा रूप अपार, को हमें साँझक एक सरि तारा, नव वृन्दावन नव तारा गन। (05)

1.3 अमीर खुसरो : (खुसरो की हिन्दी कविता–सं. ब्रजरत्नदास): मुकरी–156,160, 162, 168, 175, 184, 185, 188, 197,204.
दोहा–291, 292, 295.
पद–286, 293.

2.कबीर : (हजारी प्रसाद द्विवेदी) पद सं 2, 3, 8, 11, 12, 36, 41, 42, 57, 67, 69, 87, 89, 97, 108, 112, 220, 221, 122, 224, 231, 151,154, 165, 234, 235, 243, 245, 249, 250. (30)

3.जायसी : पद्मावत (संपादक रामचंद्र शुक्ल) नागमती वियोग खंड (19)

इकाई 1 : चंदबरदाई

(ए) चंदबरदायी का 'पृथ्वीराज रासो'
(ఌ) 'पृथ्वीराज रासो' में समाज
(ఌఌ) काव्य भाषा एवं शिल्प
(ఌट) कयमास वध की विशिष्टता

इकाई 2 : विद्यापति

(ए) विद्यापति का काव्य संसार
(ఌ) देश एवं देश–भाषा की कविता
(ఌఌ) पदावली की विशिष्टता

(प्ट) काव्य कला

इकाई 3 : अमीर खुसरो

(प) अमीर खुसरो का काव्य संसार
(पप) अमीर खुसरो की कविता में हिन्दी भाषा का स्वरूप
(प्प) लोक कविता से जुड़ाव
(प्ट) काव्य कला

इकाई 4 : कबीर

(प) कबीर की सामाजिक विचारधारा
(पप) प्रेम – दर्शन
(प्प) दर्शन एवं रहस्य–भावना
(प्ट) काव्य भाषा एवं काव्य रूप

इकाई 5 : जायसी

(प) सूफीवाद और कवि जायसी
(पप) जायसी : प्रेमाख्यान का स्वरूप
(प्प) जायसी : लोक संस्कृति
(प्ट) काव्य भाषा एवं काव्य रूप

अनुशंसित ग्रंथ :

1. पृथ्वीराज रासो की भाषा – नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन दिल्ली
2. हिंदी साहित्य का आदिकाल – हजारी प्रसाद द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
3. कबीर – हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
4. विद्यापति – शिवप्रसाद सिंह, लोकभारती, इलाहाबाद
5. जायसी – विजयदेव नारायण साही, हिंदुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद
6. कबीर की खोज – राजकिषोर, वाणी प्रकाषन, नयी दिल्ली
7. पूरा कबीर –सं. बलदेव वंषी, प्रकाषन संस्थान, नयी दिल्ली

दषम प्रष्न पत्र
सगुण भक्ति काव्य ठ।⊬ 312

क्रेडिट : 03

भक्ति काव्य ने हिन्दी भाषी समाज की संस्कृति की रचना में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। निर्गुण भक्ति के प्रतिनिधि कवियों के अध्ययन के अनंतर सगुण भक्ति धारा के प्रतिनिधि कवियों सूरदास, मीरा, तुलसीदास और रसखान तथा इनके समकालीन कवि रहीम के माध्यम से हम इस पाठ्यक्रम में महान साहित्यिक विरासत का संवेदनात्मक ज्ञान प्राप्त करेंगे।

1. सूरदास : भ्रमरगीत सार– संपादक, रामचंद्र शुक्ल (6,9,10,108, 109,114, 116,125, 130,134,135,138,141,143,146,151,155,157,172,197.(20)

2. मीरा : जोगी मत जा मत जा मत जा, छोड़ मत जाज्यो जी महाराज, जोगिया रे प्रीत कियाँ दुख होई, हे री म्हा तो दरद दिवाणी, पपइया रे पिव की वाणी न बोल, दरस बिण दूखाँ म्हारा णैण, म्हारौ जणम जणम रो साथी, बरसाँ री बदरिया सावन री, चाँला वाही देस प्रीतम पावाँ, माई म्हां गोविन्दगुण गास्याँ। (10)

3. तुलसीदास :

कवितावली (गीता प्रेस संस्करण)–अयोध्या कांड (सं.1, 2, 5, 6,7, 8, 11, 12, 18, 20, 21, 22.)

रामचरितमानस (गीता प्रेस संस्करण) – अयोध्याकांड (दोहासं0 203 से 215 तक)

4. रसखान : (रसखान रचनावली –सं. विद्यानिवास मिश्र) 1,2,3,18,25,27,31,32,35,55,67,82,122, 125, 135.(15)

5. रहीम : दोहे – अनुचित बचन न मानिये, कहि रहीम संपति, जल जात बरि, चित्रकूट में रमि रहे, ये रहीम दर दर फिरै, जो गरीब परहित करै, जैसे तुम हमको करी, जैसी परै सो सहि रहै, अब लगी जीनो भलो, मनसिज माली की उपज, यों रहीम सुख होत है, रहिमन कठिन चितानते, रहिमन सराहिये, ओई काम।

05 बरवै– निस दिन सास, कासन कहै संदेसवा, बहुत दिना पर पियवा, लैके सुघर सुरूपिया, सरस नहीं अपरधवा

इकाई 1 : सूरदास

(९) सूरदास की कविता के आधार स्रोत

(प) सूरदास की कविता में समाज
(पप) भ्रमरगीत :दार्शनिक परिप्रेक्ष्य
(प्ट) काव्य भाषा एवं काव्य रूप

इकाई 2 : मीरा (प) मीरा की कविता में कृष्ण– भक्ति
(प) गीति तत्व एवं भाषा
(पप) प्रेम का स्वरूप
(प्ट) स्त्री–स्वातंत्र्य का प्रश्न और मीरा

इकाई 3 : तुलसीदास
(प) तुलसी की कविता में तत्कालीन समाज
(प) लोकमंगल
(पप) दर्शन एवं भक्ति
(प्ट) काव्य भाषा एवं काव्य रूप

इकाई 4 : रसखान
(प) कृष्ण भक्ति परम्परा में रसखान का महत्व
(प) रखखान की कविता में ब्रज प्रदेश
(पप) जीवन–चित्र एवं भावना
(प्ट) काव्य भाषा एवं काव्य रूप

इकाई 5 : रहीम
(प) रहीम का काव्य संसार
(प) नायक–नायिका भेद
(पप) नीति कथन की कविता
(प्ट) काव्य भाषा

अनुशंसित ग्रंथ :

1. सूरदास – रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. महाकवि सूरदास – नंददुलारे वाजपेयी, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली
3. सूर साहित्य – हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर, बम्बई
4. गोस्वामी तुलसीदास – रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
5 गोसाईं तुलसीदास – विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी वितान, वाराणसी
6. तुलसी आधुनिक वातायन से –रमेश कुंतल मेघ, राजकमल प्रकाशन,नयी दिल्ली
7. परम्परा का मूल्यांकन – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
8. भक्तिकाव्य और लोक जीवन – शिवकुमार मिश्र, दिल्ली
9. लोकवादी तुलसीदास– विश्वनाथ त्रिपाठी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
10. मीरा एक पुनर्मूल्यांकन –सं. पल्लव, आधार प्रकाशन, पंचकूला

11. तुलसीः एक पुनर्मूल्यांकन –सं. अजय तिवारी, आधार प्रकाशन, पंचकूला

12. रसखान – श्यामसुन्दर व्यास, साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली

एकादश प्रश्न पत्र

रीतिकाव्य

ठ ।ऋ 313

क्रेडिट : 03

रीतिकाव्य की विविध धाराओं के प्रतिनिधि कवियों केशव, मतिराम, पद्‌माकर, बिहारी एवं घनान्द का अध्ययन इस पाठ्‌यक्रम का लक्ष्य है।

निर्धारित अंश :

केशव : (रीति काव्य धारा – सं. रामचंद्र तिवारी) वनमार्ग में राम प्रसंग – 38 से 47

बिहारी : (बिहारी सं0– विश्वनाथ प्रसाद मिश्र) दोहा स. – 4,8,13,19, 30,32, 50,52,54, 64,67,71,77, 116, 146, 163 ,214, 367, 369, 394, 424, 439, 446, 461,468 (25)

मतिराम : (रीति काव्यधारा –सं. रामचंद्र तिवारी,रामफेर तिवारी) 1, 4, 6, 8, 9, 14, 15, 16, 20, 27, (10)

घनानन्द : (घनानंद कवित्त : सं0– विश्वनाथप्रसाद मिश्र) पद सं. 7, 24, 27, 29, 41, 42, 58,63,83,88, (10)

पद्‌माकर : (रीति काव्य धारा – सं. रामचंद्र तिवारी) पद संख्या 2, 9, 10, 12, 13, 14,15, 24, 25, 26(10)

इकाई 1 : रीति काव्य

(प्) रीति की अवधारणा

(पप) रीतिकाव्य की अंतर्धाराएँ

(पपप) रीतिकाव्य का सामाजिक आधार

(पट) कविता की कला

इकाई 2 : केशव

(प्) केशव : काव्य संसार

(पप) केशव : सहृदयता का प्रश्न

(पपप) केशव का आचार्यत्व

(पट) केशव : वर्णन प्रणाली एवं संवाद योजना

इकाई 3 बिहारी :

(प) बिहारी सतसई : वर्ण्य विषय
(पप) शृंगार की विशिष्टता
(प्प) सामंती समाज की अभिरुचि एवं जीवन
(प्ट) 'गागर में सागर' की कला

इकाई 4 : मतिराम/पद्माकर

(प) मतिराम : संवेदना, भाषा एवं शिल्प
(पप) मतिराम : सरसता एवं स्वाभाविकता
(प्प) पद्माकर : संवेदना, भाषा एवं शिल्प
(प्ट) पद्माकर : शृंगारिकता एवं भावुकता

इकाई 5 : घनानंद

(प) रीतिमुक्ति का काव्य संसार
(पप) अंतर्जगत का प्रेम
(प्प) प्रेम की पीर
(प्ट) रचना विधान

अनुशंसित ग्रंथ :

1. रीतिकाव्य की भूमिका – नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
2. बिहारी का नया मूल्यांकन – बच्चन सिंह, लोकभारती, इलाहाबाद
3. घनानंद और स्वच्छंद काव्यधारा – मनोहर लाल गौड़, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
4. रीतिकालीन कवियों की प्रेमव्यंजना – डॉ0 बच्चन सिंह, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
5. केशव का आचार्यत्व – डॉ0 विजयपाल सिंह, राजपाल एंड संस, दिल्ली।
6. महाकवि मतिराम – डा0 त्रिभुवन सिंह, हिंदी प्रचारक संस्थान, वाराणसी।
7. रीतिकालीन काव्य सिद्धान्त – डॉ0 सूर्यनारायण द्विवेदी, संजय बुक सेंटर, वाराणसी।
8. हिन्दी साहित्य का अतीत, भाग–2, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी वितान, वाराणसी।

द्वादश प्रश्न पत्र
भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा ठ।ः 314

क्रेडिट : 03

भाषा विज्ञान भाषाओं के अध्ययन का शास्त्र है। इस पाठ्यक्रम में हम भाषा विज्ञान की प्रारंभिक अवधारणाओं का परिचय प्राप्त करने के साथ ही हिंदी भाषा का भी ज्ञान प्राप्त करेंगे।

इकाई

1.1 भाषा : परिभाषा, और प्रकृतिगत विशेषताएँ, भाषा और बोली।

1.2 भाषा विज्ञान : परिभाषा, भाषा विज्ञान के अध्ययन की पद्धतियाँ।

1.3 भाषा विज्ञान का ज्ञान की अन्य शाखाओं से सम्बन्ध।

1.4 हिन्दी की ध्वनियाँ–स्वर और व्यंजन।

1.5 हिन्दी में आगत विदेशी ध्वनियाँ।

इकाई 2 :

(ए) हिन्दी शब्द सम्पदा।
(पप) हिन्दी की शब्द कोटियाँ–संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया–विशेषण का सामान्य परिचय
(पपप) हिन्दी की व्याकरणिक कोटियाँः सामान्य परिचय।
(पट) हिन्दी की कारकीय व्यवस्था (सामान्य परिचय)।
(ट) हिन्दी क्रिया रूपों का सामान्य परिचय।

इकाई 3 :

(ए) हिन्दी की प्रमुख बोलियों (पूर्वी एवं पश्चिमी हिन्दी) का सामान्य परिचय।
(पप) देवनागरी का विकास और वैज्ञानिकता।
(पपप) राजभाषा के रूप में हिन्दी की स्थिति।

अनुशंसित ग्रंथ :

1 भाषा विज्ञान की भूमिका – देवेन्द्र नाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
2 भाषा विज्ञान – भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद।
3 सामान्य भाषा विज्ञान – बाबूराम सक्सेना, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।
4 हिंदी भाषा का उद्‌भव और विकास – उदयनारायण तिवारी, भारती भंडार, इलाहाबाद।
5 भाषा और समाज – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

तेरहवाँ प्रश्न पत्र
विशेष अध्ययन (प्राचीन साहित्य)

नोट : पाठ्यक्रम में विशेष अध्ययन के अंतर्गत प्राचीन साहित्य का अध्ययन किया जायेगा। इसके अंतर्गत तीन विकल्प हैं, जिनमें से छात्र को किसी एक का चयन करना है।

आदिकालीन काव्य 13(अ) **ठ ।भ्‍ 315;1द्ध**

क्रेडिट : 03

पाठ्यपुस्तक :

आदिकालीन काव्य संग्रह – सं0 डॉ0 नागेन्द्र नाथ उपाध्याय तथा डॉ0 शंभूनाथ पाण्डेय।

पाठ्यांश :

1–दोहे और पद –सरहपाद 2–दोहे और पद –कण्हपा 3–प्राकृत व्याकरण के दोहे– हेमचन्द्र 4–संदेश रासक (अथ शरद –वर्णनम्) – अब्दुर्रहमान 5–थूलिभद्द फागु–जिनपद्म सूरि 6–नेमिनाथ चाउपई –विनय चंद्र सूरि (विरह वर्णन बारहमासा)

इकाई 1 : आदिकालीन काव्य

(प) सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि
(पप) प्रमुख काव्य धाराएँ
(पपप) हिन्दी की जातीय कविता का विकास
(पट) कविता की भाषा

इकाई 2 : <u>सरहपाद / कण्हपा</u>

(प) सरहपाद : जीवन एवं कविता
(पप) समाज व्यवस्था और सरहपाद की कविता
(पपप) कण्हपा : जीवन एवं कविता
(पट) समाज व्यवस्था और कण्हपा की कविता

इकाई 3 : हेमचंद्र/अब्दुर्रहमान

(ए) हेमचंद्र : जीवन एवं कविता
(ऐ) हेमचंद्र के कविता की विशिष्टता
(ओ) अब्दुर्रहमान : जीवन एवं कविता
(औ) संदेश रासक का महत्त्व

इकाई 4 : जिनपद्म सूरि/विनयचंद्र सूरि

(ए) जिनपद्म सूरि : जीवन एवं कविता
(ऐ) जिनपद्म सूरि : भाषा एवं काव्य कला
(ओ) विनयचंद्र सूरि : जीवन एवं कविता
(औ) विनयचंद्र सूरि : भाषा एवं काव्य कला

अनुशंसित ग्रंथ

1.हिंदी साहित्य का आदिकाल – हजारी प्रसाद द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना

सगुण भक्ति काव्य 13(ब) ठ।़

315;2द्ध

क्रेडिट : 03

पाठ्यपुस्तक :

सगुण भक्ति काव्य–संग्रह : सं0 रामनरेश वर्मा – डॉ0 सूर्यनारायण द्विवेदी

पाठ्य अंश :

सूर	:	भ्रमर के पद संपूर्ण।
तुलसी	:	कवितावली, आरंभ से 20 छंद।
मीराबाई	:	पदावली – आरंभ से 15 पद।
नन्ददास	:	शरद रजनी वर्णन आरंभ से 15 पद।

इकाई 1 : सगुण भक्ति काव्य

(i) सगुण भक्ति का दार्शनिक आधार
(ii) वैष्णव मत
(iii) सगुण काव्य में समाज
(iv) 'लीला' एवं जीवन का उत्सव

इकाई 2 : सूरदास

(i) सूर की कविता में कृष्ण का स्वरूप
(ii) सूर की कविता में गोपालक समाज
(iii) भक्ति भावना
(iv) काव्य कला

इकाई 3 : तुलसीदास

(i) तुलसी की कविता में राम
(ii) युगबोध
(iii) भक्ति भावना
(iv) काव्य कला

इकाई 4 मीराबाई

(i) मीरा की कविता में कृष्ण
(ii) युगबोध, विद्रोह एवं स्वातंत्र्य चेतना
(iii) प्रेम एवं भक्ति
(iv) काव्य कला

इकाई 5 : नन्ददास

(i) नन्ददास का काव्य संसार

(ध) नन्ददास : भक्ति भावना

अनुशंसित ग्रंथ :

1. सूरदास – रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. महाकवि सूरदास – नंददुलारे वाजपेयी, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली
3. सूर साहित्य – हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर, बम्बई
4. गोस्वामी तुलसीदास – रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
5 तुलसीः एक पुनर्मूल्यांकन –सं. अजय तिवारी, आधार प्रकाशन, पंचकूला
6. तुलसी आधुनिक वातायन से –रमेश कुंतल मेघ, राजकमल प्रकाशन,नयी दिल्ली
7. परम्परा का मूल्यांकन – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
8. भक्तिकाव्य और लोक जीवन – शिवकुमार मिश्र, दिल्ली
9. लोकवादी तुलसीदास– विश्वनाथ त्रिपाठी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
10. मीरा एक पुनर्मूल्यांकन –सं. पल्लव, आधार प्रकाशन, पंचकूला

निर्गुण भक्ति काव्य 13(स)

ठ ।⁄ 315;3द्ध

क्रेडिट : 03

निर्धारित अंश :

1– गोरखबानी – सबदी सं0 125 – 150 तक।
2– संतकाव्य संग्रह (सं0 परशुराम चतुर्वेदी, किताब महल, इलाहाबाद, नया संस्करण)
कबीर : साखियाँ संपूर्ण, फरीद संपूर्ण, दादूदयाल संपूर्ण, मलूकदास संपूर्ण, दयाबाई संपूर्ण, भीखा संपूर्ण।

इकाई 1 : संतकाव्य

(प्) भक्ति आंदोलन में संतों का महत्त्व
(प्प्) संत साहित्य का वैचारिक आधार
(प्प्प्) निर्गुण भक्ति : दार्शनिक आधार
(प्ट) संत साहित्य की सामाजिक भूमिका

इकाई 2 : कबीर

(प्) निर्गुण भक्ति का स्वरूप
(प्प्) दार्शनिक आधार
(प्प्प्) युगबोध
(प्ट) उलटबासियों का निहितार्थ

इकाई 3 : गोरखनाथ/फरीद

(प्) नाथपंथ एवं निर्गुण भक्ति
(प्प्) गोरखनाथ : कविता, निर्गुण भक्ति एवं समाज चेतना
(प्प्प्) फरीद : जीवन एवं काव्य संसार
(प्ट) फरीद : निर्गुण भक्ति एवं समाज चेतना

इकाई 4 : दादू दयाल/मलूकदास

(प्) दादूदयाल : जीवन एवं काव्य संसार
(प्प्) दादू दयाल : निर्गुण भक्ति एवं समाज चेतना
(प्प्प्) मलूकदास : जीवन एवं काव्य संसार
(प्ट) मलूकदास : निर्गुण भक्ति एवं समाज चेतना

इकाई 5 : दयाबाई/भीखा

(प) दयाबाई : जीवन एवं काव्य संसार
(पप) दयाबाई : निर्गुण भक्ति एवं समाज चेतना
(ppप) भीखा : जीवन एवं काव्य संसार
(पट) भीखा : निर्गुण भक्ति एवं समाज चेतना

अनुशंसित ग्रंथ :

1 नाथ सम्प्रदाय – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, नैवेद्य निकेतन, वाराणसी।

2 हिन्दी साहित्य में निर्गुण सम्प्रदाय – डा0 पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल।

3 सन्त साहित्य – डॉ0 राधेश्याम दूबे, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

4 हिंदी काव्य की निर्गुणधारा में भक्ति – डॉ0 श्यामसुन्दर शुक्ल, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

5 उत्तर भारत की सन्त परम्परा – डॉ0 परशुराम चतुर्वेदी, किताब महल, प्रयाग।

6 रहिये अपने गाँवा जी–मनोज कुमार सिंह, विष्वविद्यालय प्रकाषन ,वाराणसी

7.. कबीर – हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

8. कबीर की खोज – राजकिषोर, वाणी प्रकाषन, नयी दिल्ली

9. पूरा कबीर –सं. बलदेव वंषी, प्रकाषन संस्थान, नयी दिल्ली

चौदहवां प्रश्न पत्र
विशेष अध्ययन (विविध)

नोट :– इस प्रश्नपत्र के अंतर्गत चार विकल्प हैं, जिनमें से एक का चयन करना है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी 14(̈)

ठ ।भ्316;1द्ध

क्रेडिट : 03

इकाई 1– स्वरूप एवं उद्देश्य

(प) प्रयोजन मूलक हिन्दी : तात्पर्य एवं स्वरूप
(पप) ज्ञान साहित्य एवं रचनात्मक साहित्य का अंतर
(पपप) ज्ञान साहित्य में प्रयुक्त भाषा की विशिष्टता।

इकाई 2– भाषा शैली एवं प्रयुक्त प्रकार

(प) हिन्दी भाषा की व्यापक संकल्पना
(पप) हिन्दी की सामाजिक शैलियां
(पपप) प्रयुक्ति के संदर्भ में प्रयोजनमूलक हिन्दी।
(प्ट) पारिभाषिक शब्दावली एवं उसके निर्माण के सिद्धांत

इकाई 3– प्रयोजन की दिशायें

(प) प्रयोजनमूलक हिन्दी : प्रकार एवं लक्षण
(पप) कार्यालयी हिन्दी : प्रयोग एवं भाषायी लक्षण
(पपप) तकनीकी हिन्दी : प्रयोग एवं भाषायी लक्षण
(प्ट) व्यावसायिक हिन्दी : प्रयोग एवं भाषायी लक्षण।

ईकाई 4– अनुवाद एवं पत्रकारिता

(प) अनुवाद : अवधारणा एवं प्रक्रिया
(पप) अनुवाद में हिन्दी का प्रयोग
(पपप) पत्रकारिता : अवधारणा एवं प्रक्रिया
(प्ट) पत्रकारिता में हिन्दी का प्रयोग

अनुशंसित ग्रंथ :

1. प्रयोजनमूलक हिंदी – डा0 दंगल झाल्टे।
2. कामकाजी हिंदी – डॉ0 कैलाशचन्द्र भाटिया।
3. हिंदी का सामाजिक संदर्भ – डॉ0 रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव एवं रमानाथ सहाय केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।
4. राष्ट्रभाषा और हिंदी – डॉ0 राजेन्द्र मोहन भटनागर, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।
5. सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग – गोपीनाथ श्रीवास्तव, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डा0 रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।
7. प्रशासनिक हिंदी निपुणता – हरिबाबू कंसल, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

8. प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धान्त और व्यवहार – रघुनंदन प्रसाद षर्मा

हिन्दी नाटक एवं रंगमंच 14 (इ)

ठ।ः 316;2द्ध

क्रेडिट : 03

पाठ्यांश :

यहूदी की लड़की (आगा हश्र कश्मीरी), कोणार्क (जगदीश चन्द्र माथुर) , हानूश (भीष्म साहनी) , चरनदास चोर (हबीब तनवीर), आठवाँ सर्ग (सुरेन्द्र वर्मा), बहू (त्रिपुरारी शर्मा)

इकाई 1 : हिन्दी नाटक एवं रंगमंच **:**

(प) हिन्दी नाटक का विकास
(पप) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक : अंतर्धाराएँ
(पपप) हिन्दी रंगमंच : परिचय
(पट) स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी रंगमंच : अंतर्धाराएँ

इकाई 2 :

(प) यहूदी की लड़की : कथावस्तु, प्रतिपाद्य एवं प्रमुख चरित्र
(पप) यहूदी की लड़की : रंगमंचीयता
(पपप) कोणार्क : कथावस्तु, प्रतिपाद्य एवं प्रमुख चरित्र
(पट) कोणार्क : रंगमंचीयता

इकाई 3 :

(प) हानूश : कथावस्तु, प्रतिपाद्य एवं प्रमुख चरित्र
(पप) हानूश : रंगमंचीयता
(पपप) चरनदास चोर : कथावस्तु, प्रतिपाद्य एवं प्रमुख चरित्र
(पट) चरनदास चोर : रंगमंचीयता

इकाई 4 :

(प) आठवाँ सर्ग : कथावस्तु, प्रतिपाद्य एवं प्रमुख चरित्र
(पद्ध आठवाँ सर्ग : रंगमंचीयता
(पपप) बहू : कथावस्तु, प्रतिपाद्य एवं प्रमुख चरित्र
(पट) बहू : रंगमंचीयता

अनुशंसित ग्रंथ :

1. हिंदी नाटक : उद्भव और विकास – दशरथ ओझा, राजपाल एंड संस, दिल्ली
4. पहला रंग – देवेन्द्रराज अंकुर, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5. रंग परम्परा – नेमिचन्द्र जैन
6. समकालीन हिन्दी नाटक की संघर्श चेतना – गिरीष रस्तोगी, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़

उर्दू साहित्य 14(ब) ठ।⁻ 316;3द्ध

क्रेडिट : 03

पाठ्यांश :

मीर

1. उल्टी हो गईं सब तदबीरें कुछ न दवा ने काम किया
2. देख तो, दिल कि जाँ से उठता है
3. फ़कीरानाः आये, सदा कर चले
4. पत्ता–पत्ता, बूटा–बूटा, हाल हमारा जाने है
5. मैं कौन हूँ, अय हमनफसाँ, सोख्तः जाँ हूँ

नज़ीर अकबराबादी

1. आदमीनामा
2. बंजारानामा
3. देख बहारें होली की
4. मुफ़लिसी
5. कन्हैया का बालपन

ग़ालिब

1. बसकि दुश्वार है, हर काम का आसाँ होना
2. अिश्रत–ए–कतरा है, दरिया में फ़ना हो जाना
3. कोई उम्मीद बर नही आती
4. दर्द मिन्नत कश–ए–दवा न हुआ
5. फिर मुझे दीदः–ए–तर याद आया

इकबाल

1. नया शिवालय
2. चाँद–मेरे वीराने से
3. सरमाया व मेहनत–बंदा–ए–मजबूर
4. फर्माने–खुदा–उठो मेरी दुनिया
5. मुल्ला और बहिश्त–मै भी हाजिर था

फिराक गोरखपुरी

1. थरथरी–सी है आस्मानों में
2. गैर क्या जानिये, क्यों मुझको बुरा कहते हैं
3. सुकूते–शाम मिटाओ, बहुत अँधेरा है
4. आधी रात को

फैज़ अहमद फैज़

1. रक़ीब से
2. जिन्दाँ की एक सुबह
3. पास रहो
4. दरबार–ए–वतन में
5. निसार मैं तेरी गलियों के
6.

इकाई 1 : उर्दू साहित्य :

(प) उर्दू भाषा का विकास
(पप) उर्दू साहित्य का संक्षिप्त परिचय
(ppप) हिन्दी समाज और 'ग़ज़ल'
(पट) हिन्दी साहित्य से संबंध

इकाई 3 : कवि

(प) मीर : विशिष्टता
(पप) नज़ीर अकबराबादी : विशिष्टता
(ppप) ग़ालिब : विशिष्टता

इकाई 4 : कवि

(प) इकबाल : विशिष्टता
(पप) फ़िराक : विशिष्टता
(ppप) फ़ैज़ : विशिष्टता

अनुशंसित ग्रंथ :

1 प्रो0 एहतेशाम हुसैन – उर्दू साहित्य का इतिहास, अंजुमन तरक्की–ए–उर्दू, ओन्यू हाउस, नई दिल्ली

हिन्दी पत्रकारिता 14 (क) ठ ।‑ 316;4द्ध

इकाई 1 : इतिहास :

(प) पत्रकारिता : आषय एवं आवष्यकता

(पप) भारतेन्दु युगीन पत्रकारिता, भारतेन्दु हरिष्चन्द्र का अवदान

(पपप) स्वतंत्रता संघर्श एवं हिन्दी पत्रकारिता

(प्ट) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी पत्रकारिता

इकाई 2 :

(प) समाचार : परिभाषा

(पप) समाचार के विभिन्न स्रोत

(पपप) समाचार संकलन

(प्ट) संपादन

इकाई 3 :

(प) भेंटवार्ता के प्रकार तथा उनकी प्रविधि

(पप) शीर्षक कला

(पपप) फ़ीचर–लेखन : स्वरूप और उद्देश्य,

(प्ट) साप्ताहिक पत्रिकायें

इकाई 4 :

(प) समाचार पत्र में अग्रलेख

(पप) संपादकीय टिप्पणियाँ

(पपप) मेकअप, प्रूफ–संशोधन, मुद्रण कला का सामान्य ज्ञान

(प्ट) पृश्ठ – आकल्पन

अनुशंसित ग्रंथ :

1. हिंदी समाचार पत्रों का इतिहास – अम्बिका प्रसाद वाजपेयी
2. हिंदी पत्रकारिता – डॉ0 कृष्ण बिहारी मिश्र
3. संपादन कला – के0 पी0 नारायण
4. पत्रकार कला – के0 पी0 नारायण
5. पत्र संपादन कला – नन्द किशोर त्रिखा

6. मुद्रण कला – प्रफुल्लचन्द्र ओझा मुक्त
7. हिंदी पत्रकारिता : विविध आयाम – सं0 वेदप्रताप वैदिक

छठवां सत्र

पंद्रहवाँ प्रश्न पत्र

कथा साहित्य

ठ |भ्321

कथा साहित्य समाज का संपूर्ण चित्र प्रस्तुत करता है। रंगभूमि, मैला आँचल और आधा गाँव इन तीन उपन्यासों के साथ ही इस पाठ्यक्रम में हम **नौ** प्रतिनिधि कहानियों का अध्ययन करेंगे।

क्रेडिट : 03

पाठ्यांश :

उपन्यास : 1. रंगभूमि (प्रेमचंद)
2. मैला आँचल (फणीश्वर नाथ रेणु)
3. आधा गाँव (राही मासूम रज़ा)

कहानियाँ (09) : उसने कहा था (चंद्रधर शर्मा गुलेरी), पूस की रात (प्रेमचंद), गदल (रांगेय राघव), बदबू (षेखर जोषी), दोपहर का भोजन (अमरकांतद्ध, अमृतसर आ गया है (भीष्म साहनी), काला रजिस्टर (रवीन्द्र कालिया), पार्टीशन (स्वयं प्रकाश) यही सच है (मन्नू भंडारी),

कहानियों से व्याख्या नहीं पूछी जाएगी।

इकाई 1 : रंगभूमि :

(प) संवेदना एवं शिल्प
(पप) भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन एवं 'रंगभूमि'
(पपप) औद्योगिकीकरण एवं किसान
(प्ट) सूरदास का चरित्र

इकाई 2 : मैला आँचल :

(प) संवेदना एवं शिल्प
(पप) उपन्यास में आंचलिकता
(पपप) गँवई जीवन एवं किसान समाज
(प्ट) सामाजिक एवं राजनीतिक संदर्भ

इकाई 3 : आधा गाँव :

(प) भारतीय समाज और मुसलमान

(प) मुसलमान समाज का आंतरिक सत्य
(पप) राजनीतिक संदर्भ : स्वतंत्रता आंदोलन, सांप्रदायिकता एवं देश विभाजन
(पट) भाषा एवं शिल्प

इकाई 4 : कहानियाँ

(प) **उसने कहा था :** संवेदना एवं शिल्प
(प) **पूस की रात :** संवेदना एवं शिल्प
(पप) **गदल :** संवेदना एवं शिल्प
(पट) **बदबू :** संवेदना एवं शिल्प

इकाई 5 : कहानियाँ

(प) **दोपहर का भोजन :** संवेदना एवं शिल्प
(प) **अमृतसर आ गया है :** संवेदना एवं शिल्प
(पप) **काला रजिस्टर :** संवेदना एवं शिल्प
(पट) **पार्टीशन :** संवेदना एवं शिल्प
(ट) **यही सच है :** संवेदना एवं शिल्प

अनुशंसित ग्रंथ :

1. प्रेमचंद और उनका युग – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
2. कहानी नयी कहानी – नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. आज की हिंदी कहानी – विजय मोहन सिंह, दिल्ली
4. उपन्यास : स्थिति और गति– चंद्रकांत बॅड़दिवेकर
5. उपन्यास का इतिहास –गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
6. हिंदी उपन्यास – शिवनारायण श्रीवास्तव, सरस्वती मंदिर, वाराणसी
7. कहानी आंदोलन की भूमिका – बलिराज पांडेय, अनामिका प्रकाशन, इलाहाबाद
8. आज की हिंदी कहानी – विजय मोहन सिंह, दिल्ली
9. हिन्दी उपन्यास – आचार्य रामचन्द्र तिवारी

सोलहवाँ प्रश्न पत्र

आधुनिक काव्य (स्वातंत्र्योत्तर) ठ ।⊬ 322

आधुनिक कविता को संपूर्णता से समझने के क्रम में इस पाठ्यक्रम में हम स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता के पाँच प्रतिनिधि कवियों त्रिलोचन, शमशेर बहादुर सिंह, मुक्तिबोध, धूमिल और केदारनाथ सिंह की संवेदना एवं काव्य कला को समझेंगे।

क्रेडिट : 03

पाठ्यांश :

1. **मुक्तिबोध :** भूल ग़लती, मैं तुम लोगों से दूर हूँ, बहुत शर्म आती है।
2. **शमशेर बहादुर सिंह :** सागर तट, ये शाम है, बात बोलेगी।
3. **धूमिल** : अकाल दर्शन, मोचीराम, रोटी और संसद।
4. **केदारनाथ सिंह :** बनारस, बुनाई का गीत, सन् 47 को याद करते हुए।
5. **रघुवीर सहाय** की रामदास, आपकी हँसी और अधिनायक
6. **चंद्रकांत देवताले** औरत कुछ बच्चे और बाकी बच्चे, माँ जब खाना परोसती थी

इकाई 2 : शमशेर बहादुर सिंह :

(प) काव्य संसार एवं काव्य दृष्टि
(पप) सौदर्य चेतना
(पपप) प्रगतिशील चेतना एवं प्रयोगशीलता
(पट) भाषा एवं शिल्प

इकाई 3 : मुक्तिबोध :

(प) काव्य संसार एवं काव्य दृष्टि
(पप) सामाजिक, राजनीतिक चेतना
(पपप) मध्यवर्ग एवं आत्मालोचन
(पट) भाषा एवं शिल्प : फैंटेसी का संसार

इकाई 4 : धूमिल :

(प) काव्य संवेदना एवं काव्य दृष्टि
(पप) अकविता एवं नक्सलबाड़ी का संदर्भ

(iii) भारतीय लोकतंत्र की आलोचना
(iv) भाषा एवं शिल्पः सपाटबयानी का संदर्भ

इकाई 5 : केदारनाथ सिंह :

(i) काव्य संवेदना एवं काव्य दृष्टि
(ii) लोक संवेदना एवं सौंदर्य
(iii) जीवन की पक्षधरता के रूप
(iv) भाषा एवं शिल्प

अनुशंसित ग्रंथ

1. समकालीन हिंदी कविता – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, नई दिल्ली
2. समकालीन कविता का यथार्थ – परमानंद श्रीवास्तव, हरियाणा ग्रंथ अकादमी
3. कविता के नये प्रतिमान –नामवर सिंह, राजकमल प्रकाषन, नयी दिल्ली
4. एक कवि की नोटबुक : राजेष जोषी, राजकमल प्रकाषन, नयी दिल्ली
5. कविता और समाज : अरुण कमल , वाणी प्रकाषन, नयी दिल्ली
6. मेरे समय के षब्द : केदारनाथ सिंह, राधाकृश्ण प्रकाषन, नयी दिल्ली
7. समकालीन काव्य यात्रा : नंदकिषोर नवल,राजकमल प्रकाषन, नयी दिल्ली
8. कविता और संवेदना : विजय बहादुर सिंह, राधाकृश्ण प्रकाषन,
9. साठोत्तरी कविता : परिवर्तित दिषायें : विजय कुमाार, प्रकाषन संस्थान
10. हिन्दी की प्रगतिषील कविता : लल्लन राय, हरियाणा ग्रंथ अकादमी,

सत्रहवां प्रश्न पत्र

हिन्दी गद्य (कथेतर विधायें) **ठ।़ 323**

कथेतर गद्य विधाओं नाटक, निबंध और आत्मकथा का अध्ययन इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

क्रेडिट : 03

पाठ्यांश :

नाटक – अंधेर नगरी (भारतेन्दु)

निबंध – श्रद्धा भक्ति (रामचंद्र शुक्ल), कुटज (हजारी प्रसाद द्विवेदी), मेरे राम का मुकुट भीग रहा है (विद्यानिवास मिश्र), लंका की एक रात (कुबेर नाथ राय)

आत्मकथा –अपनी खबर (पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र)

इकाई 1 : :

(प्) आख्यान का पुनः सृजन
(प्प्) आधुनिक संदर्भ
(प्प्प्) चरित्र – रचना
(प्ट) रंगमंचीयता एवं नाट्य शिल्प

इकाई 2 : अपनी खबर :

(प्) हिन्दी की प्रमुख आत्मकथायें
(प्प्) अपनी खबर : व्यक्ति चित्र
(प्प्प्) अपनी खबर : समाज–चित्र
(प्ट) भाषा एवं शिल्प

इकाई 3 : निबंध :

(प्) रामचंद्र शुक्ल की निबंध कला
(प्प्) श्रद्धा भक्ति : केन्द्रीय विचार, भाषा एवं शिल्प
(प्प्प्) हजारी प्रसाद द्विवेदी की निबंध कला
(प्ट) कुटज : केन्द्रीय विचार, भाषा एवं शिल्प

इकाई 4 : निबंध :

(प्) विद्यानिवास मिश्र की निबंध कला
(प्प्) मेरे राम का मुकुट भीग रहा है : केन्द्रीय विचार, भाषा एवं शिल्प
(प्प्प्) कुबेर नाथ राय की निबंध कला

(प्ट) लंका की एक रात : केन्द्रीय विचार, भाषा एवं शिल्प

अनुशंसित ग्रंथ :

1 रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

2 दूसरी परम्परा की खोज – नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

3 रामचन्द्र शुक्ल – मलयज, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

4 आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का साहित्य – चौथीराम यादव, हरियाणा ग्रंथ अकादमी

5 समकालीन हिन्दी निबंध : कमला प्रसाद, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़

6 हिन्दी निबंध और निबंधकार– रामचन्द्र तिवारी

अठरहवां प्रश्न पत्र

काव्य शास्त्र ठ।ः 324

भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र के प्रमुख सिद्धांतों का समान्य ज्ञान प्राप्त करना इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य है।

क्रेडिट : 03

इकाई 1 :

(प) काव्य के लक्षण
(पप) काव्य हेतु
(पपप) काव्य प्रयोजन

इकाई 2 :

(प) प्रमुख संप्रदाय
(पप) रस संप्रदाय का सामान्य परिचय
(पपप) ध्वनि संप्रदाय का सामान्य परिचय

इकाई 3 :

(प) प्लेटो : प्रमुख काव्य सिद्धान्त
(पप) अरस्तूः प्रमुख काव्य सिद्धान्त
(पपप) मैथ्यू अर्नाल्डः प्रमुख काव्य सिद्धान्त

अनुशंसित ग्रंथ

1. भारतीय साहित्यशास्त्र – गणेश–त्र्यंबक देशपांडे, पापुलर बुक डिपो, पूना।
2. रसमीमांसा – रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
3. संस्कृत आलोचना – बलदेव उपाध्याय, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।
4. काव्यशास्त्र – भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
5. भारतीय काव्य विमर्ष : राममूर्ति त्रिपाठी, वाणी प्रकाषन, दिल्ली
6. पाश्चात्य काव्यशास्त्र – देवेन्द्रनाथ शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
7. पाश्चात्य साहित्य चिंतन – निर्मला जैन, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
8. पाष्चात्य काव्यषास्त्र : इतिहास, सिद्धान्त और वाद – डॉ. भगीरथ मिश्र

उन्नीसवां प्रश्न पत्र

विशेष अध्ययन (आधुनिक साहित्य)

नोट : इस प्रश्नपत्र के अंतर्गत तीन विकल्प हैं, जिनमें से एक का चयन करना है।

छायावादी काव्य19(अ) ठ।≁ 325;1द्ध

क्रेडिट : 03

पाठ्यपुस्तकें :

1. जयशंकर प्रसाद– लहर– :
   मधुप गुनगुना कर कह जाता, बीती विभावरी जाग री,
   आह रे वह अधीर यौवन, वे कुछ दिन कितने सुन्दर थे,
   मेरी आँखों की पुतली में, अशोक की चिंता, शेरसिंह का शस्त्र समर्पण।
2. निराला – अपरा (सरोज स्मृति)
3. सुमित्रानन्दन पंत – पल्लव : (उच्छ्वास, बसंत श्री, स्वप्न, मुसकान, छाया)
4. महादेवी वर्मा – नीरजा (आरंभ से 08 गीत)

इकाई 1 : छायावाद

(प्) द्विवेदी युगीन स्वच्छंदतावाद और छायावाद

(प्प्) छायावाद में रोमेंटिक भावना

(प्प्प्) स्वतंत्रता संग्राम एवं नवजागरण का सन्दर्भ

(प्ट) छायावाद : सौंदर्य चेतना

इकाई 2 : प्रसाद :

(प्) रोमेन्टिक भावना
(प्प्) राष्ट्रीय चेतना
(प्प्प्) आख्यान की आधुनिकता
(प्ट) काव्य कला

इकाई 3 : निराला

(प्) रोमेंटिक भावना
(प्प्) युग संदर्भ

(ï) आख्यान की आधुनिकता
(ïट) काव्य कला

इकाई 4 : सुमित्रानंदन पंत

(ï) रोमेंटिक भावना
(ïï) प्रकृति चित्रण
(ïïï) पल्लव की भूमिका : काव्य दृष्टि
(ïट) काव्य कला

इकाई 5 : महादेवी वर्मा

(ï) रोमेंटिक भावना
(ïï) रहस्य भावना
(ïïï) युग संदर्भ
(ïट) काव्य कला

अनुशंसित ग्रंथ :

1 जयशंकर प्रसाद : नंददुलारे वाजपेयी, भारती भंडार, इलाहाबाद

2 कामायनी – एक पुनर्विचार : मुक्तिबोध, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

3 निराला की साहित्य साधना (तीन भाग) : रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

4 सुमित्रानंदन पंत : डॉ. नगेन्द्र

5 छायावाद : नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

6 महादेवी वर्मा : जगदीश गुप्त, नई दिल्ली,

हिन्दी उपन्यास 19(ब)

ठ।‑ 325;2द्ध

क्रेडिट : 03

पाठ्यांश :

1. ग़बन (प्रेमचंद)
2. त्यागपत्र (जैनेंद्र)
3. झीनी–झीनी बीनी चदरिया (अब्दुल बिस्मिल्लाह)
4. कसप (मनोहर श्याम जोशी)
5. कलिकथा वाया बाईपास (अलका सरावगी)
6. दौड़ (ममता कालिया)

इकाई 1 : हिन्दी उपन्यास

(प) उपन्यास की अवधारणा और यूरोपीय उपन्यास
(पप) भारत में उपन्यास
(ppp) नवजागरण, राष्ट्रीय आंदोलन और हिन्दी उपन्यास
(पट) स्वातंत्र्योत्तर भारत और हिन्दी उपन्यास

इकाई 2 : गबन/त्यागपत्र

(प) ग़बन और मध्यवर्गीय समाज
(पप) ग़बन और राष्ट्रीय आंदोलन
(ppp) त्यागपत्र : कथा वस्तु और शिल्प
(पट) त्यागपत्र : स्त्री का प्रश्न

इकाई 3 : झीनी झीनी..../कसप

(प) बुनकर समाज का सच और 'झीनी झीनी बीनी चदरिया'
(पप) भारतीय मुसलमान और 'झीनी झीनी बीनी चदरिया'
(ppp) कसप : गल्प और उपन्यास
(पट) कसप : विद्रूप का यथार्थ और यथार्थ का विद्रूप

इकाई 4 : कलिकथा वाया बाईपास/दौड़

(प) इतिहास का औपन्यासिक रूपांतरण और 'कलिकथा वाया बाईपास'
(पप) युगीन यथार्थ और 'कलिकथा वाया वाईपास'
(ppp) समकालीन समाज का यथार्थ और 'दौड़'

(प्ट) युवा मन और 'दौड़'

अनुशंसित ग्रंथ :

1. प्रेमचंद और उनका युग – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
2. उपन्यास : स्थिति और गति– चंद्रकांत बॅड़दिवेकर
3. उपन्यास का इतिहास –गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
4. हिंदी उपन्यास – शिवनारायण श्रीवास्तव, सरस्वती मंदिर, वाराणसी
5. हिन्दी उपन्यास – आचार्य रामचन्द्र तिवारी

समकालीन हिन्दी साहित्य 19(स) ठ।⊬ 325 ;3द्ध

क्रेडिट : 03

पाठ्यांश :

उपन्यास : सूखा बरगद : मंज़ूर एहतेशाम
नाटक : कोर्ट मार्शल : स्वदेश दीपक
कहानियाँ : तिरिया चरित्तर (शिवमूर्ति), मान पत्र (संजीव), साज–नासाज (मनोज रूपड़ा), चिट्ठी(अखिलेश)
आत्मकथा : जूठन : ओमप्रकाश वाल्मीकि
कवितायें :
अशोक वाजपेयी : अपनी आसन्न प्रसवा माँ के लिए तीन गीत, अकबर अली खाँ का सरोदवादन, वह बूढ़ा मुसलमान, उम्मीद चुनती है शायद।
वीरेन डंगवाल : हडड़ी खोपड़ी खतरा निशान, मार्च की एक शाम में आई आई टी कानपुर, जहिरूद्दीन डागर का ध्रुपद सुनकर, सुअर का बच्चा
अरुण कमल : ख़ुशबू रचते हाथ, हाट, वास्तु शान्ति नहीं है देवि, मातृभूमि, जिसने हत्या होते देखी
राजेश जोशी : इत्यादि, बिजली सुधारने वाले, जब तक मैं एक अपील लिखता हूँ, किस्सा उस तालाब का, मारे जायेंगे

इकाई 1 : सूखा बरगद :

(प) आधुनिकता एवं मध्यवर्गीय शहरी मुसलमान
(पप) सांप्रदायिकता एवं सामाजिक विभाजन
(पपप) आज़ाद भारत में राजनीति–प्रक्रिया एवं मुसलमान
(पट) युवा मन, असुरक्षा की भावना एवं आंतरिक द्वंद्व

इकाई 2 : कोर्ट मार्शल :

(प) आधुनिक समाज में छुआछूत का प्रश्न
(पप) आधुनिकता, लोकतांत्रिकता एवं मध्यकालीन सामंती मानसिकता का द्वंद्व
(पपप) कथा वस्तु एवं चरित्र–रचना
(पट) नाट्य शिल्प एवं रंगमंचीयता

इकाई 3 : कहानियाँ :

(प) तिरिया चरित्तर : संवेदना एवं शिल्प
(पप) मान पत्र : संवेदना एवं शिल्प
(पपप) साज नासाज : संवेदना एवं शिल्प
(पटद्ध चिट्ठी : संवेदना एवं शिल्प

इकाई 4 : कवितायें :

(प) अशोक वाजपेयी का कविता संसार एवं काव्य दृष्टि

(प्प्) वीरेन डंगवाल का कविता संसार एवं काव्य दृष्टि
(प्प्प्) अरुण कमल का कविता संसार एवं काव्य दृष्टि
(प्ट) राजेश जोशी का कविता संसार एवं काव्य दृष्टि

इकाई 5 : जूठन :

(प्) दलित आत्मकथाओं का स्वरूप
(प्प्) जूठन में आत्मवृत्त
(प्प्प्) जूठन में समकालीन भारतीय समाज
(प्ट) आधुनिक समाज में जातीय उत्पीड़न का सवाल और 'जूठन'

अनुशंसित ग्रंथ :

1. उपन्यास : स्थिति और गति– चंद्रकांत बॅंड़दिवेकर
2. उपन्यास का इतिहास –गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. हिंदी उपन्यास – शिवनारायण श्रीवास्तव, सरस्वती मंदिर, वाराणसी
4. हिन्दी उपन्यास – रामचन्द्र तिवारी
5. हिंदी नाटक : उद्भव और विकास – दशरथ ओझा, राजपाल एंड संस, दिल्ली
6. पहला रंग – देवेन्द्रराज अंकुर, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
7. रंग परम्परा – नेमिचन्द्र जैन
8. समकालीन हिन्दी नाटक की संघर्श चेतना – गिरीष रस्तोगी, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़
9. कहानी नयी कहानी – नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
10. कहानी आंदोलन की भूमिका – बलिराज पांडेय, अनामिका प्रकाशन, इलाहाबाद
11. आज की हिंदी कहानी – विजय मोहन सिंह, दिल्ली

बीसवाँ प्रश्नपत्र

विशेष अध्ययन (भारतीय समाज एवं हिन्दी साहित्य)

नोट : इस प्रश्नपत्र के अंतर्गत चार विकल्प हैं, जिनमें से एक का चयन करना है।

भारतीय स्वाधीनता संघर्ष और हिन्दी साहित्य 20(अ) **ठ।⁄ 326;1द्ध**

इस पाठ्यक्रम में हम साहित्य और समाज के संबंधों को ऐतिहासिक और सामाजिक संदर्भों और साक्ष्यों के उदाहरण से समझने का प्रयास करेंगे। भारतीय स्वत्रंता आंदोलन वस्तुतः भारतीय जनता की मुक्ति का आंदोलन था, जिसमें जनता की बाहरी एवं भीतरी दोनों तरह की गुलामी से मुक्त होने की आकांक्षा प्रकट हुई। स्वतंत्रता आंदोलन के युग में साहित्य राजनीति और सामाज के साथ कदम से कदम मिलाकर चला। इस परिप्रेक्ष्य में एक उपन्यास एवं नौ कवियों की प्रतिनिधि कविताओं के साक्ष्य से हम सामाजिक गतिविधियों में साहित्य की भागीदारी के एक गौरवशाली अध्याय से परिचित होंगे।

क्रेडिट : 03

पाठ्यांश :

1. **उपन्यास** – कर्मभूमि (प्रेमचंद)

कवितायें :

1. भारतेन्दु – भारत : अतीत और वर्तमान, नए जमाने की मुकरी, भारत दुर्दैव, चूरन वाले का गीत, अंधेर नगरी का गीत (05)
2. मैथिलीशरण गुप्त – (भारत भारती –उद्‌बोधन खण्ड) छंद संख्या–14(हे भाइयो ! सोये बहुत), 15 (विष–पूर्ण ईर्ष्या–द्वेष), 18 (है ज्ञात क्या तुमको नहीं), 21 (आओ, मिलें सब देश–बान्धव), 25 (प्रत्येक जन प्रत्येक जन), 31 (जड़ दीप तो देकर हमें), 36 (व्यवसाय अपने व्यर्थ हैं) 38 (प्राचीन हों कि नवीन छोड़ो) 58 (समझो न भारत–भक्ति), 59 (लाखों हमारे दीन दुःखी)
3. प्रसाद –पेशोला की प्रतिध्वनि, हिमाद्रि तुंग, अरुण यह मधुमय देश हमारा, हिमालय के आँगन में (04)
4. निराला – जागो फिर एक बार –1,2
5. नवीन – हम अनिकेतन, कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, पराजित का गीत (03)
6. सुभद्रा कुमारी चौहान – खुब लड़ी मर्दानी, वीरों का कैसा हो वसंत (02)
7. केदारनाथ अग्रवाल – यह धरती है उस किसान की, मार हथौड़ा कर कर चोट, हमका ना मारो नजरिया, नकली मिली या कि असली मिली है, जन्म भूमि पर यदि आयेगा डॉलर, लंदन में बिक आया नेता (06)

इकाई 1 : स्वाधीनता और साहित्य

(प) स्वाधीनता संघर्ष और साहित्य
(पप) स्वाधीता की आकांक्षा : भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग एवं छायावाद
(प्प) राष्ट्रीय आंदोलन एवं हिन्दी का कथा साहित्य
(पट) राष्ट्रीय काव्य धारा

इकाई 2 : कर्मभूमि :

(प) स्वाधीनता संघर्ष की अंतर्धाराएँ
(पप) किसान आंदोलन का सन्दर्भ
(ppp) स्वतंत्रता आंदोलन में दलित, स्त्री एवं मुसलिम समाज की भागीदारी
(पट) गांधीवाद : प्रभाव एवं सीमायें

इकाई 3 : भारतेन्दु/मैथिलीशरण गुप्त :

(प) भारतेन्दु : नवजागरण एवं स्वाधीनता की चेतना
(पप) 'अंधेर नगरी' का रूपक
(ppp) स्वाधीनता संघर्ष एवं 'भारत भारती'
(पट) स्वाधीनता आंदोलन एवं मैथिलीशरण गुप्त

इकाई 4 : छायावादी कवि :

(प) राष्ट्रीय आंदोलन एवं छायावाद
(पप) प्रसाद : अतीत का यूटोपिया और युग संदर्भ
(ppp) निराला : जागरण का स्वर एवं युगबोध
(पट) छायावादी गीतों में राष्ट्रीय स्वाभिमान एवं राष्ट्र प्रशंसा

इकाई 5 : राष्ट्रीय एवं प्रगतिशील काव्यधारा

(प) राष्ट्रीय काव्य धारा : शक्ति एवं उत्साह की अभिव्यक्ति
(पप) राष्ट्रीय काव्य धारा : त्याग एवं बलिदान
(ppp) प्रगतिशील काव्य धारा : स्वाधीनता आंदोलन का वर्ग चरित्र
(पट) प्रगतिशील काव्य धारा : साहित्य में आज़ादी का महास्वप्न

अनुशंसित ग्रंथ :

1. आधुनिक भारत – सुमित सरकार, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
2. आज का भारत – रजनी पामदत्त, ग्रंथशिल्पी, दिल्ली
3. भारत का स्वतंत्रता आंदोलन – विपिन चन्द्र, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली
4. भारत में राष्ट्रवाद और सांप्रदायिक राजनीति – मुशीरुल हसन,
5. भारत का मुक्ति संग्राम – अयोध्या सिंह

भारतीय लोकतंत्र एवं हिंदी साहित्य 20(ब)

ठ।भ्- 326;2द्ध

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात साहित्य 'स्वतंत्रता' की वृहत्तर अवधारणा को ध्यान में रखकर उसे प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रहा है। स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज में साहित्य प्रतिबद्धता के साथ जनता के दुख–दर्द एवं उसकी आकांक्षाओं का चित्रण करता रहा है, वहीं शक्तिशाली 'व्यवस्था' का एक ईमानदार आलोचनात्मक पाठ रचता रहा है। उपन्यासों, कहानियों और कविताओं के माध्यम से हम साहित्य और समाज के संबंधों का एक नया रूप देख सकेंगे।

क्रेडिट : 03

पाठ्यांश :

1. उपन्यास : रागदरबारी
2. उपन्यास : महाभोज
3. कहानियाँ : हत्यारे (अमरकांत), सदी का सबसे बड़ा आदमी (काशीनाथ सिंह), और अंत में प्रार्थना (उदय प्रकाश), क्या तुमने सरदार भिखारी देखा है (स्वयं प्रकाश)

4. कवितायें :

नागार्जुन : बाकी बच गया अंडा, आओ रानी हम ढोएँगे पालकी, आए दिन बहार के, तीन दिन तीन रात।

धूमिल : बीस साल बाद

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना : भेड़िया–1, भेड़िया –2, भेड़िया–3, कुआनो नदी–खतरे का निशान, पोस्टमार्टम की रिपोर्ट

रघुवीर सहाय : रामदास, अधिनायक

दुष्यंत कुमार : कहाँ तो तय था चरागाँ, हो गयी है पीर

इकाई 1 : स्वाधीनता और साहित्य

(प) स्वाधीन भारत का इतिहास
(पप) स्वतंत्रता एवं लोकतंत्र : स्वप्न और यथार्थ
(ppप) आजाद भारत में जन आंदोलन
(पट) जनतांत्रिक चेतना का विकास एवं सत्ता का जन विरोधी रूप

इकाई 2 : रागदरबारी :

(प) स्वातंत्र्योत्तर भारत का सच
(पप) गँवई एवं कस्बाई समाज का यथार्थ
(ppp) विकास का छद्म
(पट) व्यवस्था का विद्रूप और 'व्यंग्य' की आवश्यकता

इकाई 3 : महाभोज :

(प) संसदीय राजनीति का सच
(पप) स्वतंत्र भारत में गाँव : विकास का प्रश्न
(ppp) दलित समाज एवं राजनीति
(पट) स्वातंत्र्योत्तर भारत में जन नायकत्व

इकाई 4 : कहानियाँ :

(प) 'हत्यारे' में स्वाधीन भारत का यथार्थ
(पप) 'और अंत में प्रार्थना ' में स्वाधीन भारत का यथार्थ
(ppp) 'क्या तुमने सरदार भिखारी देखा है' में स्वाधीन भारत का यथार्थ
(पट) 'सदी का सबसे बड़ा आदमी' में स्वाधीन भारत का यथार्थ

इकाई 5 : कवितायें :

(प) नागार्जुन : स्वाधीन भारत का यथार्थ
(पप) धूमिल : स्वाधीन भारत का यथार्थ
(ppp) सर्वेश्वरदयाल सक्सेना : स्वाधीन भारत का यथार्थ
(पट) रघुवीर सहाय : स्वाधीन भारत का यथार्थ
(ट) दुष्यंत कुमार : स्वाधीन भारत का यथार्थ

अनुशंसित ग्रंथ :

1. आधुनिक भारत – सुमित सरकार, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
2. आज का भारत – रजनी पामदत्त, ग्रंथशिल्पी, दिल्ली
3. भारत का स्वतंत्रता आंदोलन – विपिन चन्द्र, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली
4. भारत में राष्ट्रवाद और सांप्रदायिक राजनीति – मुशीरूल हसन, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली
5. भारत का मुक्ति संग्राम – अयोध्या सिंह, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली

6. अतीत का वर्तमान – अमर्त्य सेन, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली

7. भारत का स्वाधीनता संग्राम – ई.एम.एस. नम्बूदरीपाद हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली

8. औपनिवेशिक भारत में सांस्कृतिक और विचारधारात्मक संघर्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली

9. आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन – एम.एन. श्रीनिवास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

10. आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास – सव्यसायी भट्टाचार्य, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

11. आजादी के बाद का भारत – विपिन चंद्र, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

12. समकालीन भारत – विपिन चंद्र, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

13.भारत की आधी सदी – स्वप्न और यथार्थ – पूरनचंद जोशी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

दलित प्रश्न एवं दलित साहित्य 20(स) ठ।ॅ 326;3द्ध

दलित समाज वंचित वर्गों में प्रमुख है। साहित्य जनपक्षधरता के क्रम में दलितों के पक्ष में लड़ाई लड़ता रहा है। समानता, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय के लिए संघर्षरत साहित्य दलित जीवन का प्रमाणिक दस्तावेज प्रस्तुत करता रहा है। आधुनिक काल में दलितों ने वैचारिक आधारों के साथ इस लड़ाई को आगे बढ़ाया है। इस पाठ्यक्रम में हम ऐसे ही साक्ष्यों से साहित्य और समाज के संबंधों का एक नया रूप देख सकेंगे।

क्रेडिट : 03

पाठ्यांश :

1. उपन्यास – धरती धन न अपना (जगदीश चंद्र),
2. उपन्यास – नाच्यो बहुत गोपाल (अमृतलाल नागर)
3. आत्मकथा – अपने अपने पिंजरे (मोहनदास नैमिशराय)
4. कहानियाँ – ठाकुर का कुआँ (प्रेमचंद), चतुरी चमार (निराला), शवयात्रा (ओमप्रकाश वाल्मीकि), बदबू (सूरजपाल चौहान)

इकाई 1 : दलित साहित्य और वैचारिक आधार

(प) शूद्रों की सामाजिक आर्थिक स्थिति
(पप) जाति व्यवस्था एवं छुआछूत
(ppप) आधुनिक भारत में दलित
(पट) दलित साहित्य का वैचारिक आधार

इकाई 2 : धरती धन न अपना

(प) कथावस्तु एवं चरित्रांकन
(पप) दलित जीवन की त्रासदी
(ppप) समसामयिक यथार्थ
(पट) स्थानीयता और आंचलिकता

इकाई 3 : नाच्यो बहुत गोपाल

(प) कथावस्तु एवं चरित्रांकन
(पप) दलित जीवन की त्रासदी
(ppप) आधुनिकता, उपनिवेशवाद एवं दलित उत्थान
(पट) निर्गुणिया और स्त्री–सच

इकाई 4 : अपने–अपने पिंजरे

(प) कथावस्तु
(पप) आत्मवृत्त

(ii) समाज का सच
(iv) दलित जीवन की त्रासदी

इकाई 5 : कहानियाँ

(i) 'ठाकुर का कुँआ' में दलित जीवन
(ii) 'चतुरी चमार' में दलित जीवन
(iii) 'शवयात्रा' में दलित जीवन
(iv) 'बदबू' में दलित जीवन

अनुशंसित ग्रंथ :

1. दलित साहित्य का सौन्दर्यषास्त्र : षरण कुमार लिम्बाले
2. दलित साहित्य का सौन्दर्यषास्त्र : ओमप्रकाष वाल्मीकि
3. लोकतंत्र में भागीदारी का सवाल और दलित साहित्य की भूमिका : जयप्रकाष कर्दम
4. दलित साहित्य में सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना : ष्योराज सिंह बेचैन
5. चिंतन की परम्परा और दलित साहित्य : डॉ. ष्योराज सिंह बेचैन, डॉ. देवेन्द्र चौबे
6. हिन्दी उपन्यासों में दलित वर्ग : कुसुम मेघवाल
7. दलित कहाँ जायें : जियालाल आर्य
8. दलित साहित्य सृजन के संदर्भ में : डॉ. चमनलाल
9. आज का दलित साहित्य : डॉ. तेज सिंह

स्त्री प्रश्न एवं स्त्री साहित्य 20(द) ठ।भ्‍ 326 ;4द्ध

स्त्री वंचित वर्गों में प्रमुख है। साहित्य जनपक्षधरता के क्रम में स्त्रियों के पक्ष में लड़ाई लड़ता रहा है। समानता, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय के लिए संघर्षरत साहित्य स्त्री जीवन का प्रमाणिक दस्तावेज प्रस्तुत करते रहे हैं। आधुनिक काल में स्त्रियों ने वैचारिक आधारों के साथ इस लड़ाई को आगे बढ़ाया है। इस पाठ्यक्रम में हम ऐसे ही साक्ष्यों से साहित्य और समाज के संबंधों का एक नया रूप देख सकेंगे।

क्रेडिट : 03

पाठ्यांश :

1. चिन्तन – शृंखला की कड़ियाँ (महादेवी वर्मा)
2. उपन्यास – दिव्या (यशपाल)
3. उपन्यास – मित्रो मरजानी (कृष्णा सोबती)
4. नाटक – माधवी (भीष्म साहनी)

इकाई 1 : स्त्री प्रश्न एवं साहित्य

(प) पुरुष प्रधान सामाजिक संरचना में स्त्री
(पप) सामाजिक अनुकूलन में धर्म, समाज एवं परिवार की भूमिका
(प्प) आधुनिक भारत में स्त्री
(प्ट) स्त्रीवाद की अवधारणा एवं स्त्री संबंधी आंदोलन

इकाई 2 : शृंखला की कड़ियाँ

(प) भारतीय स्त्री का यथार्थ
(पप) बंधनों की पहचान
(प्प) स्त्री की मुक्ति का स्वप्न
(प्ट) स्त्री–मुक्ति का प्रथम वैचारिक दस्तावेज

इकाई 3 : दिव्या

(प) कथावस्तु
(पप) दिव्या का चरित्र
(प्प) स्त्री–यथार्थ
(प्ट) स्त्री–मुक्ति के रास्ते की पहचान

इकाई 4 : मित्रो मरजानी

(प) कथावस्तु
(पप) मित्रो का चरित्र
(प्प) स्त्री यथार्थ
(प्ट) स्त्री–मुक्ति के रास्ते की पहचान

इकाई 5 : माधवी

(प) कथावस्तु
(पप) मिथक की पुनर्रचना
(प्प) पितृसत्ता एवं स्त्री
(प्ट) स्त्री यथार्थ एवं स्त्री–मुक्ति

अनुशंसित ग्रंथ :

1. देह की राजनीति से देष की राजनीति तक : मृणाल पाण्डेय, राधाकृश्ण प्रकाषन, नई दिल्ली
2. स्त्री उपेक्षिता, सिमोन द बोउवार : अनु. प्रभा खेतान, हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।
3. औरत होने की सजा : अरविन्द जैन, विकास पेपर बैक, दिल्ली
4. स्त्री के लिए जगह : सं. राजकिषोर, वाणी प्रकाषन, नई दिल्ली
5. औरत के हक में : तसलीमा नसरीन, वाणी प्रकाषन, नई दिल्ली
6. परिधि पर स्त्री : मृणाल पाण्डेय, राधाकृश्ण प्रकाषन नई दिल्ली
7. दुर्ग द्वार पर दस्तक : कात्यायनी, परिकल्पना प्रकाषन, लखनऊ
8. स्त्रीत्व का मानचित्र : अनामिका, सारांष प्रकाषन, दिल्ली
9. संघर्श के बीच : संघर्श के बीज : सं. इलीना सेन, सारांष प्रकाषन
10. विद्रोही स्त्री : जर्मेन ग्रियर, अनु. मधु. बी. जोषी, राजकमल प्रकाषन
11. न्याय क्षेत्रे : अन्याय क्षेत्रे : अरविन्द जैन, राजकमल प्रकाषन
12. स्त्री संघर्श का इतिहास : राधा कुमार (अनुवाद), वाणी प्रकाषन, नई दिल्ली
13. स्त्रीवादी विमर्ष : समाज और साहित्य : क्षमा षर्मा, राजकमल प्रकाषन
14. उपनिवेष में स्त्री : प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाषन
15. परिवार निजी संपत्ति और राज्य की उत्पत्ति : फ्रेडरिक एंगेल्स, प्रकाषन संस्था

इकाई 1 : गद्य विधाएँ

(च) हिन्दी में गद्य विधाओं का विकास
(छ) विधा के रूप में नाटक : सामान्य परिचय
(ज) हिन्दी नाटक : संक्षिप्त रूपरेखा
(झ) हिन्दी निबंध : संक्षिप्त रूपरेखा